Postal Regd. MP/BHOPAL/244/21-23 'ANASUYA' RNI-Regd. No. 45134/86

प्रति अंक मूल्य - 4/-रु.
वार्षिक चन्दा 100/- रु. मात्र
आजीवन सदस्यता शुल्क : 700/-
प्रकाशन तिथि/पोस्टिंग तिथि : 16 अगस्त 2021

अनसूया

वर्ष : 36 अंक :20 अगस्त 2021

आद्य-संपादक : ज्योत्स्ना मिलन
संपादक : प्रीति शान्त

राखी कामगारों पर केंद्रित

भीतर

3. स्थानीय लोककला को रोज़गार से ...
4. तैयार राखियों की बिक्री से मुनाफा ...
5. वर्तमान समय की दरकार ...
7. राखी काम में जुड़ी बहनें ...

रोज़गार के विकल्प की तलाश

हमारी सदस्य बहनें कोविड की तीसरी लहर के जोखिम से निपटने की तैयारी के साथ-साथ अपने रोज़गार को फिर से खड़ा करने की कोशिशों में जुटी हुई हैं। ये बहनें अब तक जो काम करती आ रही थीं, उससे अलग हटकर वे अन्य कामों से भी जुड़ने लगी हैं ताकि अपने घर की आर्थिक स्थिति को ठीक कर पाएँ। ***मुसीबत के इस कठिन समय ने उन्हें इस बात का अहसास कराया कि अगर वे एक से ज्यादा कामों को करना सीख लें तो आगे उन्हें ऐसी तकलीफों का सामना नहीं करना पड़ेगा।***

इन दिनों रक्षाबंधन के त्यौहार के लिए बहनों ने राखियाँ बनाना शुरू किया है। हालाँकि इससे उनको बहुत ज्यादा आय नहीं हो पा रही है लेकिन कुछ न करने से बेहतर है कि वे जितना भी, जो भी काम मिल रहा है, उसे कर लें।

इन सदस्य बहनों ने राखी का सैम्पल कुछ समय पहले रूआब (सेवा भारत) में भेजा था। अब वहाँ से बहनों को राखियाँ बनाने का ऑर्डर मिला है। राखी बनाने का सामान बहनें खुद ही खरीदकर लाती हैं और घरबैठे सुंदर-सुंदर राखियाँ तैयार करती।

इनमें से अधिकतर बहनें पहली बार राखी बना रही हैं इसलिए उनको इस काम में मजा भी बहुत आ रहा है। वे कोशिश कर रही हैं कि अलग-अलग तरह की और सुंदर डिजाइन की राखियाँ बना पाएँ।

गांधीग्राम की रहने वाली ***पुष्पाबहन*** को 'सेवा-भारत' से जुड़े 8 साल हो गये हैं। वे घर पर ही बुनाई का काम करती हैं। उन्हें 'सेवा-भारत' की ओर से तनतुक सॉफ्ट टॉयस के द्वारा खिलौने बनाने का प्रशिक्षण दिलवाया गया था जिससे उनकी आमदनी में बढ़ोतरी हुई। अब वे राखियाँ भी बना रही हैं। पुष्पाबहन ऊन या धागे से राखी बनाती हैं। वे राखी का सामान स्वयं ही खरीदकर लाती हैं। अभी उन्होंने अलग-अलग ऑर्डर मिलने पर सभी के लिए 25-25 राखियाँ बनाईं। रूआब 'सेवा

भारत' से भी उनको ऑर्डर मिला, जिसे उन्होंने बड़े उत्साह से पूरा किया। अपनी राखियों का दाम उन्होंने 20 से 30 रुपये के बीच रखा। उनकी राखियाँ बहुत सुंदर हैं और सभी ग्राहकों को बहुत पसंद आ रही हैं।

कमलेशबहन 'सेवा' से दो साल से जुड़ी हैं। वे एक स्कूल में पढ़ाया करती थीं लेकिन लॉकडाउन के कारण जब स्कूल और उसके बाद वेतन मिलना भी बंद हो गया तो वे घर में सिलाई-बुनाई का काम करने लगीं। पिछले दो महीने से वे 'सेवा' द्वारा दिये गये राखी के ऑर्डर को पूरा कर रही हैं। राखियाँ बनाने का सामान वे स्वयं ही बाजार से देख-परख कर लाती हैं। अच्छी क्वालिटी का ऊन, धागा और उसमें जो मोती, बटन, सितारे, चमचम या अन्य सामग्री लगती है, वह सब वे स्वयं लाती हैं ताकि सुंदर व आकर्षक राखियाँ बना पाएँ। कई बार जब उन्हें अपनी मनपसंद सामग्री नहीं मिलती है तो वे कई दुकानों के चक्कर लगाती हैं। वे राखियों के बहुत सुंदर-सुंदर डिजाइन बनाती हैं इसलिए बाजार में उनकी राखियों की बहुत डिमांड है।

रूआब 'सेवा भारत' के लिए कमलेशबहन ने जो 25-25 राखियाँ बनाई हैं उनकी कीमत 20 रुपये रखी गई है। इन बहनों को राखी बनाने में जितनी लागत लगी, समय और मेहनत लगी उसको ध्यान में रखते हुए बहनों ने राखियों की कीमत तय की है। बहनों की बनाई राखियाँ सभी को बहुत पसंद आ रही हैं इसलिए उनको अभी और भी ऑर्डर मिल रहे हैं। कमलेश बहन राखी के काम से बहुत खुश हैं क्योंकि उनको 'सेवा' से एक अतिरिक्त रोज़गार मिला और राखियाँ बनाना उनको बहुत अच्छा लग रहा है।

-सुमनबहन,
सेवा साथी

जगवती की व्यथा-कथा

मेरा नाम ***जगवती*** है। मेरी उम्र 40 साल है। मेरे पति का नाम राजेन्द्र है। मेरे 4 बच्चे हैं, तीन बेटे और एक बेटी। मैं जहाँगीरपुरी, दिल्ली में किराये के मकान में रहती हूँ। मैं काफी समय से 'सेवा' के साथ जुड़ी हुई हूँ।

लॉकडाउन के समय मुझे और मेरे परिवार के सभी सदस्यों को कोरोना हो गया था जिसके कारण मेरे पूरे परिवार को घर में ही क्वारेंटाइन होना पड़ा। एक साथ सभी के बीमार हो जाने के कारण हमारे परिवार को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। थोड़ा-बहुत रोज़गार का काम था, वह भी बंद हो गया। उस समय 'सेवा' की आगेवान ***वंदनाबहन*** ने सेवा भारत की ओर से मेरे परिवार को राशन लाकर दिया जिससे हमें गुजारा करने में ज्यादा दिक्कत नहीं हुई। ठीक हो जाने के बाद 'सेवा' की ओर से हमें रोज़गार से जोड़ने की पहल भी की गई।

इन दिनों मैं घर में राखी बनाने का काम कर रही हूँ। मैं ठेकेदार से कच्चा माल लेकर आती हूँ और घर में राखियाँ तैयार करती हूँ। शाम को सारी तैयार राखियाँ ठेकेदार को दे आती हूँ जिसके बदले वह मुझे पीस रेट से मजदूरी देता है। इससे मेरे घर का खर्च और जरूरत पूरी हो जाती है।

-आरतीबहन,
ऑर्गनाइज़र-सेवा दिल्ली

स्थानीय लोककला को रोज़गार से जोड़ा

'सेवा' की युवा सदस्य बहनें अपने क्षेत्र की लोककला को लोगों तक पहुँचाने के लिए निरंतर काम कर रही हैं। इसमें खासतौर से एकताबहन, गरिमाबहन, ममताबहन, अंजलिबहन और लिपाक्षीबहन बहुत उत्साह के साथ काम कर रही हैं। वे अपनी लोककला को देश के हर हिस्से तक पहुँचाना चाहती हैं। ये युवा और कुछ करने की इच्छा से भरपूर बहनें इस लोककला में स्वरोज़गार के विकल्प भी तलाश रही हैं। उन्हें लगता है कि अगर ***उत्तराखंड की लोककला एपण और अन्य कलाकृतियों को बढ़ावा दिया जाये तो इससे रोज़गार के नये विकल्प मिल सकते हैं।***

इसी विचार को ध्यान में रखते हुए इन बहनों ने इस बार राखियाँ बनाना शुरू किया है। राखियों में उन्होंने ऐपण कला को शामिल किया और ***अपनी कला को एक अलग पहचान दे पाने में सफल हुईं।*** न सिर्फ राखियाँ बल्कि इस एपण कला का उपयोग उन्होंने कुशन कवर, नेमप्लेट और अलग-अलग डिजाइन की चौकियाँ बनाने में भी किया है।

राखियाँ बनाने के लिए ये सभी बहनें स्वयं ही बाजार जाती हैं और अपने मन मुताबिक सामान खरीदकर लाती हैं। राखियाँ बनाने के बाद वे अपनी मेहनत और लागत के हिसाब से इन राखियों की कीमत तय करती हैं। उनकी राखियाँ 30 रुपये से लेकर 100 रुपये तक की होती हैं और ये कीमत लागत व डिजाइन के आधार पर तय की जाती है।

इन राखियों की बिक्री के लिए भी इन बहनों ने कई विकल्प खोज रखे हैं। वे ऐपण आर्ट स्टूडियो के इंस्ट्राग्राम एवं फेसबुक द्वारा राखी की बिक्री का प्रयत्न कर रही हैं। इसके अलावा वे वाट्सएप पर इन राखियों के डिजाइन साझा कर रही हैं। वे अपनी जान-पहचान के लोगों को भी ये डिजाइन भेज रही हैं ताकि उनके काम के बारे में सभी को पता चले।

इसके अलावा, राखियों की बिक्री के लिए बहनों ने बाजार में एक स्टॉल लगाने पर भी विचार किया है ताकि बाजार से सीधे जुड़ाव स्थापित किया जा सके।

अपनी लोककला को विस्तार देने के इस प्रयत्न से जुड़ी ***ममताबहन*** बारहवीं कक्षा तक पढ़ी हैं। अब वे अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हैं ताकि अपने परिवार को आर्थिक रूप से सहायक हो पाएँ। वे कहती हैं कि, 'मैं अपना रोज़गार कर अपने मम्मी-पापा की मदद करना चाहती हूँ।'

गरिमाबहन अभी बीएफए की छात्रा हैं और पढ़ाई के साथ-साथ वे अपनी लोककला को भी बढ़ावा देना चाहती हैं। उन्होंने बताया कि, 'इस लोककला को रोज़गार के विकल्प के रूप में अपनाकर हम आत्मनिर्भर हो सकते हैं।'

एकताबहन भी बीएफए की छात्रा हैं। उन्होंने बताया कि, 'मेरी मम्मी घरेलू कामगार हैं और मेरे पिता मजदूरी का काम करते हैं। मैं पिछले 5 साल से ऐपण बना रही हूँ। मैं अपनी लोक कला को एक पहचान दिलाना चाहती हूँ और इसके साथ ही साथ कुछ आय अर्जित कर अपने परिवार की मदद भी करना चाहती हूँ।

अंजलिबहन ने बताया कि, 'मैं पॉलिटेक्निक की छात्रा हूँ। मुझे बचपन से आर्ट डिजाइन बनाने का बहुत शौक है। मैं ऐपण बनाकर अपनी लोक कला को बढ़ावा देना चाहती हूँ, साथ ही अपना खर्च स्वयं उठा सकूँ इसके लिए थोड़ा-बहुत पैसा कमाना चाहती हूँ।

-दयाबहन
एरिया इंचार्ज एवं सेवा अतिथि लोकल प्रोग्राम को-ऑर्डिनेटर

तैयार राखियों की बिक्री से मुनाफा

'सेवा मुँगेर की सदस्य बहनें विभिन्न प्रकार के धंधे-रोज़गार से जुड़ी हैं। कुछ घरखाता कामगार हैं तो कुछ फेरी-टोकरेवाली, कुछ घरेलू कामगार हैं तो कुछ छोटी-मोटी दुकान चलाने वाली बहनें हैं।

निशा भारती बेलनबाजार की रहने वाली हैं। वे पिछले 8 साल से 'सेवा' की सदस्य हैं। आत्मनिर्भर निशाबहन पिछले 5 वर्षों से स्वयं की श्रृंगार की दुकान चला रही हैं। उनके पति रवि सागर प्राइवेट जॉब करते हैं। निशाबहन के दो बच्चे हैं, जो प्राइवेट स्कूल में पढ़ते हैं। निशाबहन काफी मेहनती हैं।

निशाबहन हर दिन सुबह अपने घर के सभी काम निबटाकर, बच्चों को स्कूल और पति को ऑफिस रवाना करने के बाद अपनी दुकान सम्हालने बैठ जाती हैं। वे समयानुसार अपनी दुकान में अलग-अलग आईटम लाती हैं, जैसे पूजा-पाठ व श्रृंगार का सामान, दीपावली के समय पटाखे, फूलझड़ियाँ और रक्षाबंधन के समय राखियाँ।

निशाबहन अपनी दुकान में राखियाँ थोक भाव और खुदरा दोनों तरह से बेचती हैं। निशाबहन से जब जानकारी ली कि राखी के सीजन में आप राखी का धंधा करती हैं तो इससे कितना लाभ होता है तो उन्होंने बताया कि, 'दो-तीन साल पहले राखी का धंधा खूब चलता था। हम लोग एक महीने पहले से ही राखी बेचना शुरू कर देते थे। काफी अच्छा धंधा होता था। फायदा भी होता था। लेकिन जबसे ऑनलाइन का सिस्टम आया तब से उतना धंधा नहीं हो पाता है। इसके अलावा हर साल राखी की डिजाइन बदलती है। ऐसे में अगर हम ज्यादा माल दुकान में लगाते हैं तो हमारा माल फंस जाता है। अगले साल फिर नई डिजाइन की राखियाँ आ जाती हैं तो पुरानी राखी नहीं बिक पाती। मुँगेर में राखी नहीं बनती है इसलिए हम लोग भागलपुर से राखी लाकर बेचते हैं। 5 रुपये की राखी को हम 10 से 12 रुपये में बेचते हैं ताकि हमारा खर्च निकल जाए और कुछ मुनाफा भी मिल जाए।'

ललिताबहन फेरी-टोकरी वाली बहन हैं। उनके चार बच्चे हैं, दो बेटे और दो बेटियाँ। वे लल्लूपोखर की रहने वाली हैं और पिछले 15 वर्षों से 'सेवा' की सदस्य भी हैं।

ललीताबहन पाँच वर्षों से फेरी-टोकरे का काम कर रही हैं। वे श्रृंगार का सामान बेचती हैं। इसके अलावा सीज़न के मुताबिक अचार-मुरब्बा आदि भी बेच लेती हैं। रक्षाबंधन के समय वे राखियाँ बेचने का काम करती हैं।

वे बिक्री के लिए राखियाँ पटना और भागलपुर से लाती हैं और फिर अपनी टोकरी में सजाकर घर-घर बेचने जाती हैं। ललिताबहन ने बताया कि, 'राखी बेचने में अच्छा मुनाफा होता है। सब कुछ जोड़कर हमें एक राखी पर 4 से 5 रुपये की बचत होती है। हम लोग पुरानी राखी नहीं बेचते हैं। हर साल हम नई-नई डिजाइन की स्टेण्डर्ड राखियाँ लाते हैं इसलिए हमारा माल नहीं फँसता है। जितनी राखियाँ लाते हैं, लगभग सभी बिक जाती हैं। इस तरह से हमें हर साल रक्षाबंधन के समय अतिरिक्त कमाई हो जाती है।'

-मंजूबहन,
अध्यक्ष : क्रेडिट को-ऑपरेटिव

वर्तमान समय की दरकार : रोज़गार में बदलाव

अ ***मनदीप बहन*** घरखाता कामगार हैं और ग्राम बलबेड़ा, सनौर ब्लॉक, जिला पटियाला की निवासी हैं। वे 32 वर्ष की हैं। पिछले वर्ष जब कोविड के केस बढ़ रहे थे उस दौरान ही वे 'सेवा' पंजाब से जुड़ीं। 'सेवा' पंजाब में शामिल होने से पहले वे एक स्कूल शिक्षिका थीं, जो पंजाब बोर्ड के साथ काम कर रही थीं और फिर पिछले छह वर्षों से अपने गाँव के एक स्थानीय स्कूल में कक्षा 1 से 8वीं तक के बच्चों को पढ़ा रही थीं।

कोविड महामारी के कारण शिक्षण कार्य अचानक बंद हो गया। स्कूल के पास सीमित विकल्प उपलब्ध होने के कारण, उन्हें सहायक भूमिका में ऑनलाइन शिक्षण का सहारा लेना पड़ा। उन्होंने ईमानदारी और परिश्रम के साथ इस काम को किया। कई बार वे इस काम में इतनी व्यस्त हो जाती थीं कि उन्हें अपने खाने-पीने तक का ध्यान नहीं रहता था, जैसा कि उसका भाई उससे शिकायत करता है। अमनदीप अपने माता-पिता, एक बहन और दो भाइयों के साथ रहती हैं। उसके सभी भाई-बहनों ने आय अर्जित करने के लिए, नौकरी पाने के लिए कड़ी मेहनत की।

उसके पिता बिजली बोर्ड में अपनी सरकारी नौकरी से सेवानिवृत्त हो गए हैं और तब से मासिक पेंशन पर अपना गुजारा कर रहे हैं। अमनदीप ने बताया कि, उनकी माँ की तबीयत ठीक नहीं है और हर दो माह में पटियाला में डॉक्टर के पास ले जाना पड़ता है। जब महामारी शुरू हुई तो हम सभी महीनों तक घर पर बैठे रहे और कुछ काम नहीं किया। यह हमारे लिए बहुत कठिन समय था।

अमनदीप एक घरखाता कामगार सदस्य के रूप में 'सेवा' में शामिल हुईं और उन्हें आजीविका के अवसर रूप में 'सेवा रुआब' की राखी बनाने व मास्क सिलने का काम मिला। वे डिजाइन को समझने और परियोजना पर्यवेक्षक द्वारा सिखाई गई तकनीकी को समझने में तेज थीं। उनके कौशल, प्रतिक्रिया और गति के लिए उन्हें सनौर में राखी उत्पादन के लिए अन्य सदस्यों के साथ समन्वय कर, नेतृत्व करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। पेशे से एक शिक्षिका होने के नाते उनमें अन्य सदस्यों को आसानी और धैर्य के साथ पैटर्न समझाने का गुण है।

अमनदीप अपने हाथों से सुंदर चीज़ें बनाना चाहती हैं। उनका मानना है कि, कोरोना यहाँ अच्छे और बुरे समय के साथ रहने के लिए है। वे अपनी प्रतिभा पर विश्वास करती हैं। वे शादी करना चाहती हैं लेकिन अच्छी तरह से शिक्षित (एमए इतिहास) होने के कारण उनके पिता यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि उन्हें ऐसा पति मिले जो उनका सम्मान करे और बिना किसी प्रतिबंध के उन्हें काम करने की अनुमति दे।

अमनदीप का सपना हस्तशिल्प के काम में खुद का रोज़गार शुरू करना है और 'सेवा' के सहयोग से वे इस तरह के अन्य अवसरों का भी पता लगाना चाहती हैं।

पटियाला जिले के सनौर ब्लॉक की ***सुखजीत*** 24 साल की हैं और पिछले साल से 'सेवा' की सदस्य हैं। वे पिछले साल महामारी कोविड के पहले चरण की अनिश्चित और कठिन अवधि के दौरान 'सेवा' में शामिल हुई थीं, जब वे बीए के अंतिम वर्ष में थीं। उनका परिवार आर्थिक रूप से कठिन दौर से गुजरा। उनके पिता के पास बहुत कम काम था जो कि एक छोटे किसान हैं। उनका

भाई अपनी कारपेंटर जॉब के माध्यम से जीवनयापन करता है। जबकि सुखजीत कम्प्यूटर कोर्स करना चाहती हैं। ***वे भाग्यशाली हैं कि उन्हें पारंपरिक हस्तशिल्प में अपनी मां की प्रतिभा विरासत में मिली है।*** उनकी माँ हालांकि एक गृहिणी हैं लेकिन हाथ के काम में कुशल हैं और सुखजीत को अपनी रचनात्मकता का पता लगाने के लिए अपने खाली समय का अधिकतम लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

सुखजीत को उनकी माँ की सहेली ने 'सेवा' से जोड़ा था। उस सहेली की बेटी ***जसप्रीत कौर,*** जो एक घर में काम करती हैं और चूड़ी बनाने व सिलाई करने में माहिर हैं, 'सेवा' की सदस्य थीं। जसप्रीत के माध्यम से सुखप्रीत ने 'सेवा' के बारे में जाना कि यह संस्था असंगठित क्षेत्र की महिला श्रमिकों के साथ काम करती है जो सामूहिक ताकत के माध्यम से खुद को ऊपर उठा सकती हैं।

जसप्रीत बहन, जो कि सनौर से 'सेवा' पंजाब की आगेवान व कम्युनिटी लीडर भी हैं, से उत्साहित होकर सुखजीत 'सेवा' की सदस्य बन गईं। हालांकि सुखजीत ने एक सिलाई केंद्र से सर्टिफाइड कोर्स पूरा किया है लेकिन उन्हें कोई काम नहीं मिल रहा था। 'सेवा' में शामिल होने का उनका कारण सरल था, कम्युनिटी के साथ जुड़ाव के माध्यम से आजीविका के अवसरों की खोज करना और उनका लाभ उठाना।

जुलाई में जब 'सेवा' रुआब के माध्यम से राखी बनाने का अवसर आया, तब जसप्रीत भी उन कारीगरों में से एक थीं जिन्हें इस काम के लिए चुना गया था। कारीगरों के छोटे समूह को समय पर उत्पादन खत्म करने की आवश्यकता थी, इसलिए उन्होंने महसूस किया कि उन्हें और बहनों के साथ की जरूरत है। तभी जसप्रीत ने सुखजीत से राखी बनाने के संबंध में चर्चा की। वे बहुत खुश हुईं और उन्होंने अपने माता-पिता को इस बारे में बताया। उनके माता-पिता ने भी उनको आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। चीजों को जल्दी से सीखने वाली शिक्षार्थी और रचनात्मक झुकाव होने के कारण, सुखजीत ने कुछ ही समय में इसकी तकनीकों और शैलियों को सीख लिया। 'सेवा' से धागे और स्टोन सामग्री प्रदान की गई और सुखजीत को काम शुरू करने और समय पर उत्पादन पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

अब वे राखी बनाकर रूआब को भेज रही हैं और सभी इन राखियों के लिए बहनों को 7.50 रुपये से 34 रुपये तक भुगतान किया जाता है। वे खुश हैं कि उन्होंने एक नया कौशल सीखा। अन्य सदस्यों के साथ बातचीत और आय के अवसर के साथ एक नया कौशल सीखने ने सुखप्रीत को प्रेरित किया है। उन्हें फुलकारी में रुचि है इसलिए अब वे उसमें अवसर तलाशना चाहती हैं।

-बबित बत्रा,
स्किल को-ऑर्डिनेटर

राखी काम से जुड़ी बहनें

अभी राखी के त्यौहार के समय कई बहनें राखी बनाने के काम में लगी हुई हैं। घर बैठे किये जाने वाले इस काम से उन्हें आय होती है और कहीं बाहर भी नहीं जाना पड़ता है। कुछ बहनें ठेकेदार से कच्चा माल लाकर राखी बनाती हैं तो कुछ बहनें खुद ही बाजार से कच्चा माल लाकर राखी बनाती हैं।

साल 2020 में 'सेवा' की तीन सदस्य बहनों ने राखियाँ बनाई थीं। उन तीन बहनों में से दो बहनों को 'सेवा' के माध्यम से नौकरी दिलवा दी गई है। वे दोनों बहनें अब अपनी नौकरी से खुश हैं। तीसरी ***नसीमबहन*** ने राखियाँ बनाना जारी रखा। वे सुंदर-सुंदर राखियाँ बना रही हैं। अब तक उन्होंने 7 सैम्पल की 40-50 राखियों के हिसाब से लगभग 300 राखियाँ बना ली हैं। इसके अलावा उन्हें अभी 50-50 राखियों का अतिरिक्त ऑर्डर मिला है।

नसीमबहन खुद की बनाई हुई राखियाँ बाजार में बेच रही हैं। उन्होंने रूआब में ठंडी लाख की राखी के सैम्पल बनाकर भेजे हैं। सैम्पल पसंद आने पर उन्हें और ऑर्डर मिलने की संभावना है।

नसीमबहन बाजार से खुद ही कच्चा माल जैसे कि, लच्छी धागा, रेशमी धागा, मोती स्टोन, सितारे जरी, फोम और टसल आदि खरीदकर लाती हैं। लच्छी धागा 5 रुपये प्रति लच्छी होता है और रेशमी धागा 20 रुपये प्रति गिट्टी के हिसाब से आता है। लाख का बटन लगाकर भी राखी बनाई जाती है। सामान लाकर वे अपने घरेलू कामों को पूरा करके राखियाँ बनाने बैठ जाती हैं। वे बताती हैं कि, 'पहले लच्छी धागा को सुलझाया जाता है। लच्छी धागा और रेशमी धागा दोनों को। यह धागा हर रंग में आता है। रंगों के हिसाब से धागे मिलाकर रंग-बिरंगी राखियाँ तैयार की जाती हैं। फिर इनमें आवश्यकता के अनुसार मोती, स्टोन, सितारे, जरी, फोम और टसल लगाये जाते हैं।

राखियाँ बन जाने के बाद वे राखियों की बिक्री के

लिए बाजार चली जाती हैं जहाँ उनकी हर राखी 15 से 20 रुपये में बिक जाती है। राखियों की कीमत उस की डिजाइन और क्वालिटी के आधार पर तय होती है।

नसीम बहन राखियाँ बनाकर और उन्हें बेचकर आय कमा रही हैं। वे अपना खुद का रोज़गार तो कर ही रही हैं इसके साथ-साथ 'सेवा' जयपुर को भी राखी बनाकर दे रही हैं। 'सेवा' जयपुर को दिल्ली रूआब ने राखी का ऑर्डर दिया है तो अब 'सेवा' जयपुर के द्वारा नसीम बहन से राखियाँ बनवाकर दिल्ली रूआब को भेजी जा रही हैं।

वे बहुत सफाई से राखियाँ बनाती हैं, जो बाजार में जल्दी से बिक जाती हैं।

-राबिया बेगम
फील्ड ऑर्गनाइजर

रोज़ी-रोटी की जुगाड़ पर महामारी की मार

2020 में लोगों ने सोचा भी नहीं था कि आने वाले समय में हम किसी ऐसे संकट में पड़ने वाले हैं जो हमारी रोज़ी-रोटी के अलावा हमारे अपनों को भी छीन ले जाएगा। इस कठिन संकट से जूझने को मजबूर ये करोड़ों परिवार गरीबी, काम की कमी, रोजी के लिए परिवार से दूर, अपने घर से दूर, पलायन को मजबूर हैं। उनके सामाजिक परिवेश में व्याप्त भेदभाव, अज्ञानता और जागरूकता की कमी, सबने मिलकर उन्हें एक ऐसे मुकाम पर लाकर खड़ा किया जहाँ फिर से वही शून्य/सिफर का सफर शुरू हुआ है। भागलपुर जिले में कोरोना की दूसरी लहर ने कई परिवारों को तबाह कर दिया। ऐसे में हमारी सदस्य बहनों की जिन्दगी किस प्रकार चल रही है, यह बहनों ने कुछ इस प्रकार बताया,

सबौर ब्लॉक की चौका फतेहपुर की सदस्य बहन ***बीबी शाहिदा,*** पति मो. पप्पू के सात बच्चे हैं। शाहिदा बहन पापड़ कामगार हैं, पति ड्राईवर हैं और एक बेटा मोटर साइकिल के शोरूम में काम करता था। लॉकडाउन के कारण सभी बेरोज़गार हो गए। शाहिदा बहन का पापड़ बनाने का काम बंद हो गया। पति का काम भी लॉकडाउन की वजह से बंद हो गया। परिवार के लिए दो वक्त की रोटी जुटाना भी उनके लिए काफी चिन्ता की बात थी। लॉकडाउन के दरमियान कोई काम नहीं था। बड़ी मुश्किल से पूरे परिवार का भरण-पोषण किया। कभी एक टाईम के खाने से ही संतुष्टि करनी पड़ी। उन्हें बड़ी कठिन परिस्थितियों से गुजरना पड़ा। कुछ समय बाद शाहिदा बहन को पापड़ बेलने का काम मिला। शाहिदा ने बताया कि, 'हम जहाँ काम करते हैं वहाँ कोरोना नियम का पालन होता है। अब उन्हें माह में एक बार मजदूरी मिलती है।'

जगदीशपुर ब्लॉक स्थित पुरैनी की सदस्य बहन बीबी शहनाज, पति मो.आदिल के छः बच्चे हैं। शहनाज बहन बीड़ी बनाने का काम करती हैं। इस काम में उनके बच्चे भी उनकी मदद करते हैं। उनके पति मजदूरी करते थे। लॉकडाउन के दौरान उनका काम बंद हो गया। इतने बड़े परिवार के समक्ष घोर संकट का समय आ गया। उनके जीवन में उथल-पुथल मच गई, बच्चे भी छोटे-छोटे। फिर उसने महाजन से कर्ज लेकर किसी तरह जीवन व्यतीत किया। उसने बताया कि एक समय ऐसा भी आया जब सभी बीमार पड़ गये और जैसे-तैसे सभी ठीक भी हुए।

बीड़ी का काम तो मिला पर इतना नहीं कि दो वक्त की रोटी मिल जाए। घर में पति के रहने और पैसों की कमी की चिन्ता के कारण अक्सर कलह की स्थिति बन जाती। खुद को इतना लाचार पहले कभी महसूस नहीं किया था। समाज में भी लोग स्वयं को बचाते थे और यहाँ तो सभी गरीब ही हैं। ***बीमारी तो बहुत देखी पर अपनों से दूर कर देने वाली बीमारी कभी नहीं देखी थी।*** हमें अल्लाह पर भरोसा है। वही बचाएगा।

घरेलू कामगार ***दुर्गादेवी*** पति दुर्गा दास जगदीशपुर ब्लॉक के भीखनपुर हरीजन टोला की रहने वाली हैं। उनके पाँच बच्चे हैं। उनके पति टोटो चलाते थे लेकिन लॉकडाउन में उनका काम बंद हो गया। दुर्गाबहन को भी उनके नियोक्ता ने काम पर से हटा दिया। अब दो समय का भोजन जुटाना भी मुश्किल हो गया। वे सुबह शिविर में जाकर खाना खातीं और बच्चों को भी खिलाती थीं। काफी दिक्कत से दुर्गा बहन का जीवन कटा। अब पिछले कुछ दिनों से पति ऑटो चलाने लगे हैं। दुर्गा बहन को भी दोबारा काम पर बुलाया गया है लेकिन उन्हें लॉकडाउन के पैसे अभी तक नहीं मिले हैं। हालाँकि वे खुद ही कहती हैं कि, 'मालिक भी क्या करें? उनका भी तो काम-धन्धा बन्द था।' वे अब भी डर रही

हैं कि यदि फिर से ऐसा होगा तो हम क्या करेंगे?

किसान हो या अन्य कामगार, सभी के जीवन को लॉकडाउन ने तबाह कर दिया। इसमें जगदीशपुर ब्लॉक के अंगारी गाँव की रहने वाली ***अनीता बहन*** के दो बच्चे हैं। पति रोहित सिंह खेती करते हैं लेकिन लॉकडाउन के कारण उनकी खेती नहीं हो सकी। बीज समय पर नहीं मिले, जिसके चलते खेत पूरा का पूरा खाली पड़ा रहा। पिछले साल महाजन से पैसे लेकर खेती शुरू की तो कभी बाढ़, कभी सूखे ने कमर तोड़ दी। रही-सही कसर दोबारा लगे लॉकडाउन ने पूरी कर दी। वे इन सबसे अकेले जूझते रहे लेकिन किसी ने साथ नहीं दिया।

निष्कर्ष ये है कि कोरोना ने इन गरीबों को 30 वर्ष पीछे कर दिया है। हमारे कई सदस्यों की मृत्यु ने भी हमें दु:ख दिया है। इन गरीबों को नियति ने मजबूत बनाया है इसलिए इतनी परेशानियों के बाद भी वे टिके रहते हैं। 'सेवा' इस कठिन परिस्थिति में अपने सभी दृश्य-अदृश्य यानि जो सदस्य हैं और जो किसी कारण से सदस्य नहीं बन पाए, उन सबके साथ अडिग खड़ी है।

-माधुरी सिन्हा,
महामंत्री:सेवा बिहार

राशन वितरण में होने वाली परेशानियाँ

'सेवा' बिहार पटना की ओर से लगभग 15 क्षेत्रों में स्टेट को-ऑर्डिनेटर, प्रोग्राम को-ऑर्डिनेटर, ऑर्गनाइजर, मोबीलाइजर, लेखापाल, एडमिन एवं क्षेत्र की आगेवान बहनों के सहयोग से राशन का वितरण किया गया। क्षेत्र की आगेवान बहनों ने लाभार्थी बहनों की सूची तैयार कर कार्यालय स्तर के कर्मी को दी। इसके पश्चात कार्यालय स्तर पर लाभार्थी बहनों का वेरिफिकेशन किया गया। समस्त प्रक्रिया के उपरांत क्षेत्र में राशन वितरण की प्रक्रिया शुरू की गई। कांटी फैक्ट्री के अंतर्गत चार क्षेत्र हैं-टीवी टॉवर, गाँधीनगर, मुन्नाचक एवं चन्दरवारी। यहाँ हमारी दो आगेवान ***लुरी देवी*** एवं ***सुनीता देवी*** ने जिम्मेदारी ली। उन्होंने कार्यालय कर्मी और आगेवान बहनों द्वारा राशन वितरण हेतु स्थान का चयन किया।

सुनीता बहन द्वारा राशन रखने एवं वितरण हेतु आँगनबाड़ी का चुनाव किया गया। जिसमें सहयोग करने हेतु उस केन्द्र की सेविका ने हामी भरी। परंतु जिस दिन वहाँ कार्यालय कर्मी एवं आगेवान पहुँचे तो सेविकाबहन ने उसी दिन सर्वे रख लिया और कहा कि दस पैकेट हमारे क्षेत्र की बहनों को देने होंगे तभी हम यहाँ से राशन वितरण करने देंगे। मैंने उनको समझाया कि बहनों की सूची बनाकर कूपन बांटे जा चुके हैं और ये सभी 'सेवा' पटना की सदस्य बहनें हैं। मैं आपके टोला में दोबारा आऊँगी और मीटिंग व सदस्यता के बाद इन बहनों को रोज़गार व अन्य लाभ दिलवाऊँगी। मेरे इतना समझाने पर भी वह अपनी बात पर अड़ी रहीं। तब मैंने नोडल ऑफिसर श्रीमति प्रियम्वदा भारती को फोन किया एवं इस स्थिति से अवगत कराया कि अगर राशन वितरण नहीं हुआ तो वर्षा से सारी सामग्री भीगकर खराब हो जाएगी। मैडम ने उस क्षेत्र की समेकित बाल विकास पदाधिकारी का नंबर दिया। सीडीपीओ से बात करने के पश्चात सेविका बहन ने सम्मान के साथ राशन वितरण करने की अनुमति दी। उसके बाद चयन की गई सभी बहनों को राशन दिया गया।

-शिखा रानी सिन्हा,
मैंनेजिंग सेवा संगिनी व फील्ड ऑर्गनाइजर

कोरोना महामारी एक बार फिर हावी

कोरोना महामारी की दूसरी लहर ने एक बार फिर से सबको मुश्किल में डाल दिया। इस बार संक्रमण शहरी बस्तियों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी तेजी से फैल गया। इस बार की लहर में किसी को भी संभलने का मौका नहीं मिला। एक समय ऐसा प्रतीत होने लगा था कि कोरोना संक्रमण अब लौटकर नहीं आयेगा और वो हमारे जीवन से चला गया है। लेकिन एक बार फिर से इस संक्रमण ने सबको परेशानी में डाल दिया। दूसरी लहर में संक्रमण इतनी तेजी से बढ़ा कि कई परिवारों के सदस्य अब इस दुनिया में नहीं रहे।

इस बार प्रशासनिक अमला व शासकीय स्वास्थ्य सुविधा लेने में भी काफी परेशानी हुई, जैसे अस्पतालों में बेड नहीं होना, दवाई, गोली, इंजेक्शन दुगुने भाव में मिले। अप्रैल 2021 में संक्रमण तेजी से फैलने के कारण प्रशासन द्वारा इस बार पुन: लॉकडाउन लगाया गया। हालाँकि इस बार के लॉकडाउन में छूट दी गई थी, जिसमें घरेलु कामगार, स्ट्रीट वेंडर्स, लघु उद्योग में कार्य करने वाले श्रमिकों को कार्य करने की छूट थी। किंतु पिछली बार के कोरोना का प्रभाव इतना अधिक था कि एक वर्ष बीत जाने पर भी श्रमिकों को उनका पूर्ण रोजगार नहीं मिला है।

'सेवा' द्वारा श्रमिकों की आजिविका को लेकर शहरी क्षेत्रों में सर्वे किया गया जिसमें पाया कि सदस्यों के पास रोज़गार नहीं है। वे अपना वर्तमान रोज़गार बदलना चाहते हैं और नया रोज़गार प्रारम्भ करने हेतु इन्हें कम ब्याज के ऋण की आवश्यकता है। उन्हें अपने व्यवसाय में दक्ष नहीं होने पर काम नहीं मिलता जैसे सिलाई श्रमिकों को डिजाईन वाले मास्क, फैंसी ड्रेस आदि सिलना नहीं आता है। परिवार में न केवल कोविड-19 के कारण रोज़गार बंद व कम हुआ बल्कि जहाँ पहले एक परिवार में 4 लोग कमाते थे अब वहीं 1 व्यक्ति कमाता है। बच्चों के स्कूल भले ही न लग रहे हों लेकिन उन्हें ऑनलाईन शिक्षा दी जा रही है। इसकी फीस भी भरनी होती है। 'सेवा' द्वारा बहनों को कम ब्याज पर ऋण देकर इनका छोटा व्यवसाय पुन: प्रारम्भ करने में सहयोग किया गया, जैसे किराना दुकान

जिला बड़वानी के औझर गाँव में संगीताबहन मालवीय डिजीटल सखी के तौर पर कार्यरत हैं। उनके पति पान की छोटी-सी दुकान चलाते हैं। परिवार में पति, पत्नी व 2 बच्चे हैं। परिवार की आय 7 से 8 हजार रूपये मासिक है। इस आय से परिवार के पालन-पोषण व बच्चों की फीस जमा करवाने में समस्या आती है। इसके लिये संगीताबहन ने प्रधानमंत्री रोज़गार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी) योजना के तहत बैंक ऑफइंडिया से 5 लाख रुपये का लोन लिया। फिर 2 लाख रुपये की राशि खाते से निकाल कर छोटे स्तर पर एक सिलाई सेन्टर शुरू किया। इसमें बहन ने अपने ही घर पर 5 सिलाई मशीन लगाकर आजीविका से स्कूल ड्रेस की सिलाई का काम लिया। इस तरह उन्होंने अपने साथ-साथ 12 बहनों को सिलाई का काम दिलवाया। ये सभी बहनें अब प्रतिदिन 250 रुपये कमा रही हैं और मासिक लगभग 6500 से 7500 रुपये तक कमा रही हैं। साथ ही साथ बहनें छोटे स्तर पर मास्क सिलाई, ब्लाउज व अन्य सिलाई का काम कर रही हैं। संगीताबहन अपने इस व्यवसाय को धीरे-धीरे और आगे बढ़ाना चाहती हैं।

पर सामान खरीदने हेतु, त्यौहार पर बनाई जाने वाली सामग्री के कच्चा माल हेतु ऋण दिया गया ताकि वे अपना काम पुन: प्रारम्भ कर सकें। इसी तरह ग्रामीण क्षेत्रों में रोज़गार के माध्यम से श्रमिकों को रोज़गार उपलब्ध कराने में सहायता की गई।

कोरोना महामारी की द्वितीय लहर में सदस्यों के परिजन भी कोरोना से प्रभावित हुए और कुछ अब इस दुनिया में नहीं रहे। कुछ को बीमारी का देर में पता चला तो कुछ को सही समय पर इलाज ही नहीं मिल पाया। कुछ सदस्यों व उनके परिवार को कोरोना होने पर उन्हें इलाज की सुविधा तो मिली किंतु जब उन्हें कोरोना हुआ था तब उनकी मानसिक स्थिति काफी बिगड़ गई थी। सभी को लगता था हम बच पायेंगे या नहीं।

इस बार की लहर में अधिकांश लोगों की मृत्यु हुई है। संस्था द्वारा ऐसे सदस्यों के साथ रोज फोन पर बातचीत करके, उनको डॉक्टर से वीडियो कॉल के माध्यम से परामर्श दिलवाया गया। छोटे-छोटे सकारात्मक वीडियो भेजे ताकि उन्हें सकारात्मक ऊर्जा मिले।

सदस्यों को अपनी बीमारी के समय इलाज हेतु पैसे उधार मांगना पड़े, उन्हें अपना हाथ ठेला, दुकान, मकान, जेवर को बेचना या गिरवी रखना पड़ा। तब जाकर वे अपनी बीमारी का खर्च उठा सके। इससे सदस्यों को आर्थिक नुकसान हुआ है। सदस्यों को इस परिस्थिति से बाहर निकालने हेतु शहरी एवं ग्रामीण आजीविका मिशन के साथ समन्वय करके मास्क सीलना, पीपीई किट सीलना, एप्रिन सीलना, स्कूल युनीफॉर्म सीलने का कार्य दिलवाया गया। साथ ही लघु-उद्योगों में चूड़ी बनाना, पापड़ बनाना, अस्पताल में सफाई कार्य दिलवाया गया। किंतु ये सब सदस्यों तक नहीं पहुँच पाये। संस्था द्वारा लगातार इनके रोज़गार प्रारम्भ करने व बढ़ाने हेतु सतत् प्रयास जारी हैं।

-कविता मालवीय,
स्टेट को-ऑर्डिनेटर

कोरोना की त्रासदी से उबरने के साधन और भी हैं

सु*नीता देवी* ग्राम हसनपुर, ब्लॉक जगदीशपुर, भागलपुर की रहने वाली महिला किसान हैं। उनकी आमदनी का मुख्य साधन खेती एवं बकरी पालन है। इसी काम से वे अपनी दो बच्चियों के साथ कुल चार लोगों की आजीविका चलाती हैं। सुनीता देवी बताती हैं कि कोरोना काल में जब सभी लोग आर्थिक तंगी से जूझ रहे थे, उस वक्त हमें ज्यादा परेशानी नहीं उठानी पड़ी। इस बात का रहस्य उजागर करते हुए उन्होंने बताया कि उनका बकरी पालन का रोज़गार है और बकरी किसानों का एटीएम होता है।

जब कभी पैसे की जरुरत होती तो बकरी बेचकर आसानी से पैसे मिल जाते। सुनीता देवी आज 6-7 साल से बकरी पालन का काम कर रही हैं। उनके पास अभी 19 बकरियाँ हैं। उन्हें बकरियों के इलाज और रखरखाव के संबंध में बहुत अच्छी जानकारी है।

इस जानकारी का लाभ 'सेवा' से जुड़ी उस गाँव की बहुत सारी बहनों ने उठाया है। सुनीता देवी 'सेवा' द्वारा गठित महिला किसानों की कंपनी कर्णभूमि कृषक प्रोड्यूसर कंपनी की शेयरधारक भी हैं। बकरी पालन की सफलता को और सुदृढ़ करने के लिए वे हमेशा कहती हैं कि, बाज़ार में बकरियों के लिए उपलब्ध आहार शुद्ध नहीं होता इसलिए उस पर निर्भर नहीं रहा जा सकता है। इसके लिए एक विश्वसनीय स्रोत से इसका उत्पादन किया जाना चाहिए।

उनके इस सुझाव को ध्यान में रखते हुए 'सेवा' द्वारा

बकरी पालन

गठित इन्टरप्रेन्योर सपोर्ट सिस्टम की टीम के द्वारा इस काम को आगे बढ़ाते हुए बकरी आहार की गुणवत्ता परीक्षण का काम जारी है। आने वाले कुछ दिनों में एक अच्छा विश्वसनीय बकरी आहार महिला किसानों को उपलब्ध करवाया जायेगा। इस बात को लेकर समूहों में काफी उत्साह भी है। किसानों को इस बात का पूरा भरोसा है कि कर्णभूमि के द्वारा उपलब्ध किसी भी उत्पाद में मिलावट की कोई गुंजाइश नहीं होती है।

सुनीता देवी बताती हैं कि कोरोना से तीन महीने घर में बिना काम-धंधा रहने वाले परिवारों की स्थिति ठीक नहीं है। अब लॉकडाउन खुलने के बाद जो लोग बाहर कमाने गए हैं। वहाँ से भी फोन आता है कि काम नहीं मिल रहा है। ऐसे में गाँव में रह रहे उनके परिवार के लिए बकरी पालन बहुत अच्छा साधन है।

ग्राम हरवा, ब्लॉक जगदीशपुर, भागलपुर की ***रीता देवी*** अपने तीन बच्चों और माता-पिता के साथ अपने फूस के मकान में रहती हैं। उनकी आमदनी का मुख्य स्रोत बकरी पालन और पति के द्वारा मजदूरी से कमाये गये रुपये ही हैं। रीता देवी कहती हैं कि, एक साल से कोरोना काल के कारण मजदूरी का काम भी ठीक से नहीं मिलता। घर का खर्चा चलाना मुश्किल हो जाता था। कभी-कभी ऐसा लगता था कि अब या तो भूखे रहना होगा या भीख मांगनी पड़ेगी। हालाँकि ऐसे कठिन वक्त में बकरी पालन ही हम सभी की जरूरतों को पूरा करने का एकमात्र साधन था।

अगर मैं बकरी पालन नहीं करती तो बहुत मुश्किल होती। आज मैं एक बात समझ चुकी हूँ कि बकरी पालन कर परिवार की जरूरतों को पूरा किया जा सकता है। पहले मैं समझती थी कि बकरी पालन से केवल छोटे-मोटे खर्चे ही पूरे किये जा सकते हैं पर कोरोना की त्रासदी ने हमें और हमारे पूरे परिवार को यह बात समझा दी कि बकरी पालन करके कोरोना की चुनौती को पूरी हिम्मत के साथ लड़ा जा सकता है। आज हमारे पास 7 बकरियाँ हैं। अब मैं इस व्यवसाय को और बढ़ाऊँगी तथा इसकी देखभाल भी अच्छे तरीके से करूँगी। सबसे ज्यादा खुशी की बात यह है कि अब आने वाले समय में इस काम के लिए हमारी अपनी कर्ण भूमि कृषक प्रोड्यूसर कंपनी में इसके लिए ट्रेनिंग और बकरी का आहार भी मिलने लगेगा।

-सुबोध भाई,
कृषि विशेषज्ञ

मालिक : ''अनसूया ट्रस्ट'' की ओर से प्रकाशक-मुद्रक : प्रीति शान्त, म.प्र.हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पी.एण्ड टी. चौराहा, शास्त्रीनगर, भोपाल (म.प्र.)-462003. फोन : 0755-2790039
मुद्रण : प्रियंका ऑफसेट, प्रेस कॉम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल. फोन : 2555789

अनसूया

अनसूया कार्यालय :

द्वारा- म.प्र.हिन्दी साहित्य सम्मेलन,
मायाराम सुरजन स्मृति भवन,पी.एण्ड टी.चौराहा,
शास्त्रीनगर, भोपाल (म.प्र.) 462003 फोन नं. : 2790039

ई-मेल - ansuya_trust@rediffmail.com,
Facebook - ansuya_trust@rediffmail.com